वचोभिः।।श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे। धत्से कृपा मुचितमम्बपरं तवैव ।। ९ ।। आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।।नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः। क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०।। जगदम्ब विचित्रमंत्र किं परिपूर्णा करुणास्तिचेन्मयि । अपराधपरम्परा वृत्तं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ।।११।। मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।।१२।।

❀ इति देव्यापराधक्षमापन स्तोत्रम् ❀

# विन्ध्यवासिनी स्तोत्र

दैत्य संहारन वेद विचारन दुष्टन को तुमहीं दलती हो ।
खडग त्रिशूल लिये धनुबान औ सिंह चढ़े रण में लड़ती हो ।

सेवाकुलतया। मयापञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि॥ इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपानापि भविता। निरालम्बोलम्बोदर जननि कं यानि शरणम् ॥५॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा। निरातङ्को रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः॥ तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं। जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।६। चिता भस्मालेपोगरलशमनं दिक्पटधरो। जटाधारी कण्ठेभुजगपतिहारीपशुपतिः॥ कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं। भवानि त्वत्पाणिग्रहण परिपाटी फलमिदम् ॥७॥ न मोक्षस्याकांक्षा भव विभववांछाऽपि च न मे। न विज्ञानापेक्षा शशि मुखि सुखेच्छापि न पुनः॥ अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै। मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किं। रूक्षचिन्तनपरैर्नकृतं

दास के साथ सहाय सदा सो दया करि आन फतै करती हो।
मोंहि पुकारत देर भई जगदम्ब विलम्ब कहाँ करती हो ॥१॥
आदि की ज्योति गणेश की मातु कलेश सदा जन के हरतीहो।
की कहुँ दैत्यन युद्ध भयो तहँ श्रोणित खप्पर लै भरती हो।
की कहुँ देवन गाँछकियो तहँ धाय त्रिशूल सदा धरतीहो, मों०
सेवक से अपराध परो कछु आपन चित्त में ना धरती हो।
दास के काज सँभारि नितै जन जानि दया को मया करतीहो।
शत्रु के प्राण संहारनको जग तारनको तुम सिंधु सती हो, मों०
की तो गई बलिसंग पताल कि तो पुनि ज्योति अकाशगतीहो।
किधौं कामपरो हिंगलाजहिंमें, कै सिंधुके त्रिदुमें जा छिपतीहो।
चुग्गुल चोर लबारन को बटुवारन को तुमहूँ डरती हो। मोंहि०
बान खिरान कि सिंह हेरान कि ध्यान धरे प्रभु को जपती हो॥

की कहुँ सेवक कष्ट परो तहँ अष्टभुजा बल दे लड़ती हो।
सिंह चढ़े देवि छत्र विराजत लाल ध्वजा रणमें फिरतीहो, मों०
देवि तुम्हारि करौं विनती इतना तुम काज करो सुमती हो।
ब्रह्मा विष्णु महेश कि हौं रथ हाँक सदा जग में फिरती हो।
चंडहि मुंडहि जाय बधो तब जाय के शत्रु निपात गती हो, मों०
मारि दियो महिषासुर को हरि केहरि को तुमही पलती हो।
मधु कैटभ दैत्य विध्वस कियो नर देवन के पति ईशपती हो।
दुष्टन मारि आनन्द कियो निजदासनके दुखको हरती हो, मों०
साधु समाधि लगावत हैं तिनके-तन को तू तुरत तरती हो।
जो जन ध्यान धरैं तुमरो तिनकी प्रभुता चित दै करती हो।
तेरो प्रताप तिहूँपुर में तुलसी जनकी मनसा भरती हो।
होहु दयाल दया करिके जगदम्ब विलम्ब कहाँ करती हो। मों०

—❀—

# अथ देव्यापराधक्षमापन स्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुति महो। न चाह्वान ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथा ॥ न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपना परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥ विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालसतया। विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्याच्युतिरभूत ॥ तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे। कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति॥२॥पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः। परं तेषां मध्ये विरलतर-लोऽयं तवसुतः॥ मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे। कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥ जगन्मातर्मा-तस्तवचरणसेवा न रचिता। नवा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव-मया॥ तथापि त्वं स्नेहं त्वयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे। कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥ परित्यक्त्वा देवान्विविधविधि

प्रेम सहित नहिं आन उपाई ॥
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा ।
रंक पढ़त होवे अवनीसा ॥
यह जनि अचरज मानहु भाई ।
कृपा दृष्टि जापर हुइ जाई ॥
जै जै जै जग मातु भवानी ।
कृपा करहु मोहि पर जन जानी ॥

॥ अथ विन्ध्येश्वरी चालीसा समाप्त ॥

## ❋ अथ विन्ध्येश्वरी स्तोत्र ❋

निशुम्भ शुम्भ तर्जनी प्रचण्ड मुण्ड खण्डनी । वने रणे प्रकाशिनी, भजामि विन्ध्यवासिनी ॥ १ ॥ त्रिशूल मुण्ड धारिणी । धरा विघात हारिणी, गृहे गृहे निवासिनी भजामि विन्ध्यवासिनी ॥२॥ दारिद्र्यदु:खहारिणी, सतां विभूति कारणी वियोगशोकहारिणी भजामि विन्ध्यवासिनी ॥ ३ ॥ लसत्सुलोल लोचनं, लतासदं वर प्रद । कपालशूलधारिणी भजामि विन्ध्यवासिनी ॥४॥ करे मुदगदाधरी शिवा शिव प्रदायिनी । वरां वरानना शुभां भजामि विन्ध्यवासिनी ॥५॥ ऋषीन्द्र-जामिनी प्रदः त्रिधास्यरूप धारिणी । जले थले निवासिनी भजामि विन्ध्यवासिनी ॥६॥ विशिष्टशिष्टकारिणी विशालरूप धारिणी । महोदरे विलासिनी भजामि विन्ध्यवासिनी ॥७॥ पुरंदरादिसेवितं पुरादिवंश खण्डितम् । विशुद्ध बुद्धि कारिणी भजामि विन्ध्यवासिनी ॥८॥ इति श्री विन्ध्येश्वरी स्तोत्रम ॥

बार हजार पाठ कर सोई ॥
निश्चय बन्दी ते छुटि जाई ।
सत्य बचन मम मानहु भाई ॥
जापर जो कछु संकट होई ।
निश्चय देविहि सुमिरे सोई ॥
जाकहँ पुत्र होय नहिं भाई ।
सो नर या विधि करे उपाई ॥



पाँच वर्ष सो पाठ करावै ।
नौरातर महँ विप्र जिमावै ॥
निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी ।
पुत्र देहिं ताकहँ गुणखानी ॥
ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै ।
विधि समेत पूजन करवावै ॥
नित प्रति पाठ करे मनलाई ।

सिद्ध करिय अब यह मम बानी ॥
जो नर धरे मातु पर ध्याना ।
ताकर सदा होइ कल्याना ॥
विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै ।
जो देवी कर जाप करावै ॥
जो नर कहँ ऋण होय अपारा ।
सो नर पाठ करे शत बारा ॥



निश्चय ऋणमोचन होइ जाई ।
जो नर पाठ करै मन लाई ॥
अस्तुति जो नर पढ़े पढ़ावै ।
या जग में सो बहु सुख पावै ॥
जाको व्याधि सतावै भाई ।
जाप करत सब दूर पराई ॥
जो नर अति बन्दी महँ होई ।

करत विष्णु शिव जाकर सेवा ॥
चौसट्टी देवी कल्यानी ।
गौरि मंगला सब गुणखानी ॥
पाटन मुंबा दन्त कुमारी ।
भद्रकालि सुनु विनय हमारी ॥
वज्र धारिणी शोक नाशिनी ।
आयु रक्षिनी विन्ध्यवासिनी ॥



जया और विजया बैताली ।
मातु संकठी अरु विकराली ॥
नाम अनन्त तुम्हारि भवानी ।
बरनै किमि मानुष अज्ञानी ॥
जापर कृपा मातु तव होई ।
तो वह करे चहै मन जोई ॥
कृपा करहु मोपर महरानी ।

## * अथ विन्ध्येश्वरी चालीसा *

नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब ।
सन्त जनों के काज में, करती नहीं विलम्ब ॥

जय जय जय विन्ध्याचल रानी
आदि शक्ति जग विदित भवानी
सिंहवाहिनी जै जगमाता
जै जै जै त्रिभुवन सुखदाता
कष्ट निवारिनि जय जग देवी
जै जै सन्त असुर सुर सेवी ।



महिमा अमित अपार तुम्हारी ।
शेष सहस मुख वर्णत हारी ॥
दीनन के दुख हरत भवानी ।
नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी ॥
सब कर मनसा पुरवत माता ।
महिमा अमित जगत विख्याता ॥
जो जन ध्यान तुम्हारो लावै ।

रूप मातु को अधिक सुहावै।
दरश करत जन अति सुख पावै॥
तुम संसार शक्ति लै कीना।
पालन हेतु अन्न धन दीना॥
अन्नपूरना हुई जग पाला।
तुमही आदि सुन्दरी बाला॥
प्रलय काल सब नाशन हारी।



जब लगि जियौं दया फल पाऊँ।
तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ॥
दुर्गा चालीसा जो गावै।
सब सुख भोग परम पद पावै॥
देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी॥

* इति श्री दुर्गा चालीसा समाप्त *

तुम बिन कौन हरे दुख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावै ।
रिपु मूरख मोहि अति डरपावै ॥
शत्रु नाश कीजै महरानी ।
सुमिरौं इकचित तुम्हें भवानी ॥
करो कृपा हे मातु दयाला ।
ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ॥



तुम गौरी शिव शङ्कर प्यारी ॥
शिव योगी तुम्हरे यश गावैं ।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावैं ॥
रूप सरस्वति को तुम धारा ।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिना उबारा ॥
धरा रूप नरसिंह को अम्बा ।
परगट भईं फाड़ कर खम्बा ॥

जन्म मरण ताको छुटि जाई ॥
योगी सुर मुनि कहत पुकारी ।
योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ॥
शङ्कर आचारज तप कीनो ।
काम रु क्रोध जीति सब लीनो ॥
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को ।
काहु काल नहिं सुमिरो तुमको ॥



शक्ति रूप को मरम न पायो ।
शक्ति गई तब मन पछितायो ॥
शरणागत हुइ कीर्ति बखानी ।
जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥
मोको मात कष्ट अति घेरो ।

रक्तबीज शङ्खन संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी ।
जेहि अघ भार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालो को धारा ।
सेन सहित तुम तिहि संहारा ॥
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब ।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥



अमर पुरी औरो सब लोका ।
तव महिमा सब रहे अशोका ॥
बाला में है ज्योति तुम्हारी ।
तुम्हें सदा पूजै नर नारी ॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावै ।
दुख दारिद्र निकट नहिं आवै ॥
ध्यावै तुम्हें जो नर मन लाई ।

कर में खप्पर खड्ग विराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥
सोहै अस्त्र और तिरशूला।
जाते उठत शत्रु हिय शूला॥
नागकोटि में तुहीं विराजत।
तिहूँ लोक में डङ्का बाजत॥
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे।

महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावति माता ।
भुवनेश्वरि बगला सुख दाता ॥
श्री भैरव तारा जग तारिणि ।
छिन्नभाल भव दुःख निवारिणि ॥
केहरिवाहन सोह भवानी ।
लंगर वीर चलत अगवानी ॥

रच्छा करि प्रहलाद बचायो ।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मी रूप धरो जग माहीं ।
श्री नारायण अङ्ग समाहीं ॥
क्षीरसिन्धु में करत विलासा ।
दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी ।

# दु लीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।
नयो नमो अम्बे दुख हरनी ॥
निरङ्कार है ज्योति तुम्हारी ।
तिहूँ लोक फैली उजियारी ॥
शशि लिलार मुख महा विशाला ।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥

दुर्गा जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वा
तेरे ही गुन गायें भारती, हो मैया हम सब उतारें तेरी
तेरे जगत के भक्त जनन पर भीर पड़ी है भारी। दानव दल
पड़ो माँ करके सिंह सवारी। सौ सौ सिंहों से बलशाली,
भुजाओं वाली, दुष्टों को तूही तो संहारती, हो मैया। माँ बेटे का
इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता। पूत कपूत सुने हैं पर ना माता
सुनी कुमाता। सब पे अमृत बरसाने वाली, सब को हरषाने वाली।
नैया भंवर से उबारती, हो मैया, नहीं मांगते धन और दौलत, ना
चांदी ना सोना। हम तो मांगे माँ तेरे मन में एक छोटा सा कोना।
सब पे करुणा बरसाने वाली, विपदा मिटाने वाली, सतियों के सत को
संवारती, हो मैया अंबे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्परवाली
तेरे ही गुन गायें भारती हो मैया हम सब उतारें तेरी आरती।

# अथ दुर्गाद्वा... नाममाला

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी। दुर्गमच्छेदिनी दुर्ग-
साधिनी दुर्गनाशिनी॥ दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला॥ दुर्गमा दुर्गमालोका
दुर्गमात्मस्वरूपिणी। दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी। दुर्गमोहा दुर्गमगा
दुर्गमार्थस्वरूपिणी॥ दुर्गर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥ दुर्गभीमा दुर्गभ...
दुर्गभा दुर्गदारिणी। नामावलिमिमा यस्तु दुर्गाया मम ...

पठेत्सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः।

इति दुर्गाद्वात्रिंशन्नाममाला समाप्ता